श्याम नारायण पाण्डेय

कवि–परिचय

वीर रस के श्रेष्ठ कवियों में पाण्डेय जी की गणना है। प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति विशेष अनुराग उनके काव्य में परिलक्षित होता है। इनका जन्म सं. 1907 में हुआ। प्राचीन संस्कृति के प्रतीक महापुरूषों के वीर कृत्य इनके काव्यों के आधार बने। पद्मिनी की गाथा को लेकर 'जौहर' काव्य की रचना हुई। 'हल्दीघाटी' काव्य में राणा प्रताप के जीवन की घटनाओं का ओजमय वर्णन है। युद्ध–वर्णन सजीव एवं चित्रोपम है। घटनाओं और दृश्यों के वर्णन में ये इतने पटु है कि वे नेत्रों के सम्मुख नृत्य करने लगते हैं। भाषा खड़ीबोली है जिसमें वेग, ओज एवं प्रवाह रहता है। आपकी रचनाएँ प्रसाद एवं ओज गुण प्रधान होने के कारण लोकप्रिय है।

'त्रेता के दो वीर', 'माधव', 'हल्दी घाटी' और 'जौहर' आप की प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

पाठ–परिचय

वीर रस की श्रेष्ठ कविता 'मेवाड़ का सिंहासन' समूचे मेवाड़ के कालजयी इतिहास का निर्माण करने वाले बलिदानी अमर हुतात्माओं का स्मरण कराती है। मेवाड़ का सिंहासन भगवान एकलिंग का आसन है स्वयं राणा इसके दीवान है। अतः इसकी रक्षा का आह्वान किया गया है। कविता के वाचन मात्र से रोमांच तथा जोश उत्पन्न हो जाता है। मेवाड़ का इतिहास, इतिहास का एक–एक क्षण, युद्ध, बलिदान तथा उद्भट बलिदानी योद्धा हमारे समक्ष साकार एवं जीवंत हो जाते हैं।

**** ****

मेवाड़ का सिंहासन

यह एकलिंग का आसन है, इस पर न किसी का शासन है।
नित सिहर रहा कमलासन है, यह सिंहासन, सिंहासन है।।
यह सम्मानित अधिराजों से, अर्चित है राज समाजों से।
इसके पद रज पोंछे जाते, भूपों के सिर के ताजों से।।
इसकी रक्षा के लिए हुई कुर्बानी पर कुर्बानी है।
राणा ! तू इसकी रक्षा कर, यह सिंहासन अभिमानी है।।
खिलजी तलवारों के नीचे थरथरा रहा था अवनी–तल।

वह रत्नसिंह था रत्नसिंह जिसने कर दिया उसे शीतल।।
मेवाड़–भूमि बलिवेदी पर होते बलि शिशु रनिवासों के।
गोरा–बादल रण–कौशल से उज्ज्वल पन्ने इतिहासों के।।
जिस ने जौहर को जन्म दिया वह वीर पद्मिनी रानी है।
राणा ! तू इसकी रक्षा कर यह सिंहासन अभिमानी है।।
मूँजा के सिर के शोणित से जिसके भाले की प्यास बुझी।
हम्मीर वीर वह था जिसकी असि वैरी–उर कर पार जुझी।।
प्रण किया वीरवर चूँडा ने जननी–पद सेवा करने का।
कुम्भा ने भी व्रत ठान लिया रत्नों से अंचल भरने का।।
वह वीर–प्रसविनी वीर–भूमि, रजपूती की रजधानी है।
राणा ! तू इसकी रक्षा कर, यह सिंहासन अभिमानी है।।
जयमल ने जीवन दान दिया, पत्ता ने अर्पण प्राण किया।
कल्ला ने इसकी रक्षा में अपना सब कुछ कुर्बान किया।।
साँगा को अस्सी घाव लगे, मरहम–पट्टी थी आँखों पर।
तो भी उसकी असि बिजली–सी फिर गई छपाछप लाखों पर।।
अब भी करूणा की करूण कथा हम सब को याद जबानी है।
राणा ! तू इसकी रक्षा कर, यह सिंहासन अभिमानी है।।
क्रीड़ा होती हथियारों से, होती थी केलि कटारों से।
असि–धार देखने को उँगली, कट जाती थी तलवारों से।।
हल्दी–घाटी का भैरव–पथ रंग दिया गया था खूनों से।
जननी–पद–अर्चन किया गया जीवन के विकच प्रसूनों से।।
अब तक उस भीषण घाटी के कण–कण की चढ़ी जवानी है।
राणा ! तू इसकी रक्षा कर, यह सिंहासन अभिमानी है।।
भीलों में रण झंकार अभी, लटकी कटि में तलवार अभी।
भोलेपन में ललकार अभी, आँखों में है ललकार अभी।।
गिरिवर के उन्नत–शृंगों पर तरू के मेवे आहार बने।
इसकी रक्षा के लिए शिखर थे राणा के दरबार बने।।

जावरमाला के गह्वर में अब भी तो निर्मल पानी है।
राणा ! तू इसकी रक्षा कर, यह सिंहासन अभिमानी है।।

चूंडावत ने तन भूषित कर युवती के सिर की माला से।
खलबली मचा दी मुगलों में, अपने भीषणतम भाला से।।
घोड़े को गज पर चढ़ा दिया, 'मत मारो' मुगल पुकार हुई।
फिर राजसिंह–चूंडावत से अवरंगजेब की हार हुई।।

वह चामती रानी थी, जिसकी चेरि बनी मुगलानी है।
राणा ! तू इसकी रक्षा कर, यह सिंहासन अभिमानी है।।

कुछ ही दिन बीते फतह सिंह मेवाड़–देश का शासक था।
वह राणा तेज उपासक था तेजस्वी था अरि–नाशक था।।
उसके चरणों को चूम लिया कर लिया समर्चन लाखों ने।
टकटकी लगा उसकी छवि को देखा कर्जन की आँखों ने।।

सुनता हूँ उस मर्दाने की दिल्ली की अजब कहानी है।
राणा ! तू इसकी रक्षा कर, यह सिंहासन अभिमानी है।।

शब्दार्थ–

चेरी–सेविका,
अजब–अनोखी,
असिधार– तलवार की धार,
विकच– खिले हुए, विकसित,
प्रसून–पुष्प,
उन्नत श्रृंग– ऊँचे शिखर,
भूषित–अलंकृत, सजा–धजा
भूप–राजा,
अरिनाशक–शत्रु का संहार करने वाला,
वीर प्रसविनी– वीरों को जन्म देने वाली,
अवनि तल– भूतल,
कटि–कमर,
गह्वर –खड्डा,
चामती– चारूमति रानी।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

1. श्याम नारायण पाण्डेय कौनसे रस के कवि थे?
   (क) श्रृंगार (ख) शांत
   (ग) वीर (घ) करूण ( )
2. कवि ने एकलिंग का आसन किसे कहा है?
   (क) दिल्ली के सिंहासन को (ख) जयपुर के सिंहासन को
   (ग) मालवा के सिंहासन को (घ) मेवाड़ के सिंहासन को ( )
3. जौहर को जन्म देने वाली रानी का नाम है–
   (क) रानी दुर्गावती (ख) झाँसी रानी

(ग) रानी पद्मिनी (घ) रानी दमयंती ( )

4. 'हल्दी घाटी' नामक प्रसिद्ध काव्य के रचनाकार है –
(क) रामधारी सिंह दिनकर (ख) रामनरेश त्रिपाठी
(ग) रामचन्द्र शुक्ल (घ) श्यामनारायण पाण्डेय ( )

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. मेवाड़ के सिंहासन के लिए लोगों ने क्या किया?
2. कवि ने वीर प्रसविनी वीर–भूमि किसे कहा है?
3. वीरों ने जननी के पद का अर्चन किससे किया था?
4. राणा फतहसिंह की सुन्दर छवि को टकटकी लगाकर किसने देखा?

लघूत्तरात्मक प्रश्न–

1. कवि ने मेवाड़ के सिंहासन का महत्व कविता में प्रतिपादित किया है। अपने शब्दों में लिखिए।
2. असिधार की जाँच मेवाड़ के वीर कैसे करते थे?
3. हल्दीघाटी का भैरवपथ खून से क्यों रंग दिया था?
4. चूण्डावत ने जिस युवती के सिर से अपना तन भूषित किया वह कौन थी तथा चूण्डावत ने ऐसा क्यों किया?

निबंधात्मक प्रश्न–

1. 'मेवाड़ का सिंहासन' कविता का सार अपने शब्दों में लिखिए।
2. 'मेवाड़ का सिंहासन' कविता की वर्तमान में प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।
3. निम्नलिखित वीरों के वीरता एवं बलिदानी प्रसंगों का वर्णन कीजिए। सांगा, कुंभा, हम्मीर, पद्मिनी, कल्ला, चामती रानी, हाड़ीरानी, जयमल।
4. मेवाड़ का सिंहासन कविता का काव्य सौन्दर्य लिखिए।

व्याख्यात्मक प्रश्न–

1. खिलजी तलवारों से ..... इतिहासों के।
2. चूण्डावत ने तन ..... हार हुई।

*****